E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2021; 3(3): 221-222
Received: 28-05-2021
Accepted: 30-06-2021

डॉ. नीतू कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ० नीतू कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, ल.ना.मि.वि., दरभंगा, बिहार, भारत

पुष्प जी के भावनात्मक प्रसंगों को उद्घाटित करता उपन्या : नहीं लौटने वाला रास्ता

डॉ. नीतू कुमारी

सारांश
सामाजिक उपन्यास के दायरे में रॉबिन शॉ पुष्प के उपन्यासों को रखते हुए उपन्यास–कला का तात्त्विक विवेचन और उपन्यास की रचना के आधारभूत तत्त्वों का निरूपण कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, देशकाल– परिस्थिति, भाषा–शैली और जीवन–दर्शन या उद्देश्य के आधार पर किया गया है। पुष्पजी ने समाज में व्याप्त बुराइयों की आलोचना की है और साथ ही उनके इलाज भी सुझाए हैं। इनकी भाषा–शैली को देखकर ऐसा लगता है जैसे इन्होंने अपने उपन्यासों का उपयोग मूलतः अपने विचारों को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाने के लिए किया। इनके उपन्यासों में सुधारवादी संदेश साफ–दिखाई–सुनाई देते हैं। इनके उपन्यास अक्सर अपने पाठकों से उनके असली संसार की बातें करते हैं। इन्होंने बहुधा आदर्श नायक–नायिकाएँ पेश की हैं ताकि पाठकों के द्वारा सराहना की जा सके। इनके उपन्यास में विस्तार भी है, प्रभाव भी है। औपन्यासिक दृष्टि से 'नहीं लौटनेवाला रास्ता' में कथानक, देशकाल, परिस्थिति, चरित्र, संवाद, भाषागत वैशिष्ट्य और उद्देश्य जीवंत, प्रासंगिक, पठनीय और प्रशंसनीय है।

कूटशब्दः पुष्प जी, सामाजिक उपन्यास

प्रस्तावना
पुष्पजी ने भावनात्मक प्रसंगों का उद्धाटन करके इस उपन्यास की उपादेयता को और भी बढ़ा दिया है। कोई भी इनसान रोटी के बिना अर्थात् भोजन के बिना जीवित नहीं रह सकता है। केवल भोजन ही नहीं बल्कि स्नेह भी आवश्यक है। अपनी मेहनत से उपार्जित धन पर ममता होती है। गेहूँ की फसल खेतों में बार–बार उगाई और काटी जा सकती है लेकिन मुहब्बत के साथ यह संभव नहीं है। इसे न तो हम उगा सकते हैं, न काट सकते हैं, न ही रोटी की तरह सेंक सकते हैं। पुष्प जी की मार्मिकता के भी दर्शन यहाँ होते हैं– ''नए चावल और नई लड़की में कोई फर्क नहीं'' [1], और ''मुहब्बत का एक टुकड़ा भी आवश्यक है।'' [2]
इस उपन्यास में उदाहरण और तर्क से रोचकता आ गयी है। कथावस्तु में चार चाँद लग गए हैं। कथा–नायिका विभा अपने कमरे में है। खिड़कियाँ खुली हुई हैं। मन में घुटन है। फलतः थोड़ी ही देर में वह खिड़की बंद करके सुकून महसूस करती है। इसी क्रम में घोष बाबू का मुसकुराता चेहरा मानस–पटल पर आ जाता है और घोष बाबू नमस्कार करते हुए ड्राइंग रूम में आ धमकते हैं। डैडी देखते ही स्वागत करते हैं–आइए, बैठिए। कहिए, कैसे आना हुआ?
''छोटा–सा उत्तर घोष बाबू ने दिया था, ''आज पेपर नहीं आया।'' और अखबार की तरफ उनका हाथ बढ़ गया। डैडी ने कहा– ले जाइए, पढ़िए।
घोष बाबू ने स्वाभाविक हँसी हँसते हुए कहा– बस इहां ही थोड़ा उलोट–पुलोट कर लेगा।'' [3]
अगले दिन विभा ने देखा कि खिड़की के पास घोष बाबू नहीं, कोई औरत थी। वह सोचने लगी, क्या घोष बाबू ने विवाह कर लिया? अगर ऐसा हुआ हो तो उच्छी बात है। अब वह सुरक्षित हो जाएगी। और धीरे–धीरे घोष बाबू कम नजर आने लगे। एक दिन विभा कपड़े पर फूल काढ़ रही थी, तभी दरवाजे पर दस्तक पड़ी। अचानक मैगी भीतर दाखिल हुई और कहने लगी– ''मेरा नाम मैगी है। आप क्रिश्चियन हैं? और 'बैंडल चर्च' के कैलेण्डर को देखने लगी। ढेर सारी भेड़ों के बीच यीशु मसीह एक लाठी लिए खड़े हैं। जहाँ लिखा हुआ था– ''मैं ही तुम्हारा चरवाहा हूँ।'' [4]
मैगी भावुक महिला थी। उसकी बातों से भावना टपकती थी। वह कहने लगी कि मैं घोष बाबू के यहाँ इसलिए रहती हूँ क्योंकि जीसस मेरा चरवाहा है। उसने वादा किया था कि मैं तुम्हारा चरवाहा हूँ और तुम सब मेरी भेड़ें हो। मुझसे अलग नहीं होना। तुम लोगों के लिए मैं पाप का प्याला पी रहा हूँ। लेकिन जीसस ने मुझे छोड़ दिया। मैगी सिसकने लगी थी। विभा ने उससे कहा–जीसस बहुत दयालु हैं। वह सबकी सुनते हैं। तुम्हारी भी खबर लेंगे। मैगी फिर रोते हुए कहने लगी, पता नहीं मेरा यीशु कहाँ है? मैं तो इस्मत चुगताई की मैगी हूँ। विभा को पता है कि मिशनरी वाले भूखों को भोजन दिया करते हैं और लड़कियों को यीशु मसीह की भेड़ों में शामिल कर लेते हैं।

इससे घर के कूड़े से छुट्टी मिलती थी और परलोक सुधारने की कीमत भी। उन बच्चियों को हर आवश्यक चीज दी जाती है। बाद में बड़े–बड़े शहरों में नौकरी की व्यवस्था भी हो जाती है।विभा ने मैगी से सहानुभूति दिखलाते हुए उसे और करीब कर लिया और बताया कि बाइबिल में लिखा है वह यीशु मसीह सबकी रक्षा करता है और खो जाने पर खोजकर ही दम लेता है। और मिल जाने पर ''बड़े आनन्द से उसे कंधे पर उठा लेता है।'' [5]

मैगी पुनः चीखने लगी थी। उसने कहा–''मेरा जो चरवाहा है उसके हाथ में क्रॉस नहीं गोलियाँ हैं। काश मेरे पीछे कसाई होता और गले में एक बार ही छुरी फेर देता। मेरी इच्छा है कि मैं माँ बनूँ लेकिन मेरा चरवाहा मुझे हर क्षण जवान रखना चाहता है।'' [6]

यहाँ आपराधिक शोषण का भाव प्रकट हुआ है। भलाई के पीछे का स्वार्थ। यहाँ मानवता सिसकती है और दानवता मुसकुराती ही नहीं अट्टहास करती है। भौतिक जगत् की यह क्रूर सच्चाई है।

'नहीं लौटनेवाला रास्ता' का कथानक सुरुचिपूर्ण है। संवाद प्रभावोत्पादक है। चरित्र अनुकरणीय है। देशकाल, परिस्थिति के अनुसार उपन्यास उपयुक्त है और अपने उद्देश्य से परिपूर्ण है।

पुष्पजी के उपन्यास में चिंतन है, दर्शन है, मनोविज्ञान है और मनोरंजन है। मौन रहकर पढ़ने की कला लोगों को उपन्यास से मिली है। भीड़ भरे कमरे में भी पाठक उपन्यास की दुनिया में डूबकर सब कुछ भूलकर दिवास्वप्न देखने लगता है। कलेवर की दृष्टि से पुष्पजी के उपन्यास उपन्यासिका से थोड़े ही बड़े हैं। इसमें प्रेम भी है, अधिकार भी है, साहस भी है, शौर्य भी है और शक्तिशाली चरित्र भी है। औरतों का ताकतवर व्यक्तित्व भी है। इनके उपन्यास विभिन्न तबकों के लोगों की जिदंगी का अहम हिस्सा बन गये हैं। पुष्पजी ने अपने उपन्यास के बल पर भिन्न–भिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को एक साथ लाने का काम किया है, इससे एक साझी सामुदायिक समझ बनी है। पुष्पजी का यह उपन्यास साझेपन का एक अहसास पैदा करता है और साथ ही अलग–अलग तरह के लोगों, समुदायों और मूल्यों का बोध कराता है। विभिन्न समूहों के लोग जिस तरह अपनी पहचान पर सोचते हुए, उसपर सवाल उठाते हैं, यह उपन्यास हमें इसका भी अंदाजा देता है।

राबिन शॉ पुष्प का उपन्यास–संसार अनूठा है। नहीं 'लौटनेवाला रास्ता' एक भावप्रधान सामाजिक उपन्यास है। विभा ब्राउन की प्रतीक्षा से इस उपन्यास की कथावस्तु प्रारंभ होती है। खिड़की के पार कोलतार की सड़क नजर आती है। दूर घुटन के साथ भयानक आकृतियाँ नजर आती हैं जो पाप है। खिड़की बंद रहती है मगर घोष बाबू पर उपेक्षा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। घोष बाबू 'नोमोश्कार' करते हुए ''ड्राइंग रूम में आ जाते हैं। डैडी बैठने के लिए कहते हैं। वे अखबार लेकर पढ़ने लगे। ब्राउन जानती है कि यह एक बहाना है। उसने खिड़की से औरत को देखकर सोचा था कि घोष बाबू ने विवाह कर लिया है, इससे संतोष की रेखा खिंच गई। अपने को सुरक्षित महसूस करने लगी। अब ध्यान भी नहीं जाता था। एक दिन वह कपड़े पर फूल काढ़ रही थी तभी मैगी आई। कैलेंडर रखी और एक चित्र पर उसकी नजर गयी –यीशु मसीह लाठी लिए खड़े थे। नीचे लिखा था– ''मैं ही तुम्हारा चरवाहा हूँ। उसने बताया कि मैं घोष बाबू के यहाँ इसलिए रहती हूँ कि जीसस मेरा चरवाहा नहीं रहा।''[7], आगे उसने बताया–गोल्ड की सलीव उसने बेच दी है और उन पैसों से रोटी खरीद ली। ''मेरा चरवाहा मुझे काँटों से घिरे चौराहे पर छोड़ गया है– नितांत अकेला''

'नहीं लौटनेवाला रास्ता' कथात्मक एकसूत्रता के साथ आगे बढ़ता है। इसी क्रम में उसे याद आया, इसी चरवाहे ने कभी वादा किया था–मैं तुम्हारा चरवाहा हूँ, तुम सब मेरी भेड़ें। तुममें से कोई भी मुझसे अलग नहीं हो, इसलिए पाप का यह प्याला मैं पी रहा हूँ। विभा ने रोती मैगी को सहारा दिया था, ''जीसस बहुत दयालु हैं। वह तुम्हारी सुनेगा। वह हर खोई हुई भेड़ की खबर लेता है, तुम्हारी भी लेगा। ''जिसकी सौ भेड़े हों और उनमें से एक के भी खो जाने पर उसको खोज ही लेता है उसका चरवाहा। मैगी माँ बनना चाहती है। उसका चरवाहा उसे जवान रखना चाहता है अपने लिए ताकि वह बिना रोक–टोक स्मलिंग कर सके। विभा को लगता है, हर माँ मरियम बन जाती है। उसने मन–ही–मन मरियम को प्रणाम किया और हवा में कॉस बनाकर सोचने लगी, अगर इसी तरह हमेशा उसके जीवन में सनडेज रहे तो कितना अच्छा हो, कितना मधुर''। [8]

निष्कर्षतः 'नहीं लौटनेवाला रास्ता' उपन्यास मनोवैज्ञानिकता के सहारे आगे बढ़ता है, जिज्ञासा उत्पन्न करता है, नये–नये प्रश्न उभरते हैं, विचारों की शृंखला आगे बढ़ती है। संवाद सुरुचिपूर्ण हैं। देशकाल वातावरण उपयुक्त है। चरित्र की सशक्तता साफ नजर आती है। उद्देश्यपूर्ण यह उपन्यास अपनी जीवंतता को बनाए रखने में सफल है। यह शिल्पादि की दृष्टि से एक सफल उपन्यास है और पाठकों के मनोरंजन, कौतूहल और उद्देश्य की पूर्ति में सफल है। रोचकता की दृष्टि से यह पठनीय और प्रशंसनीय है।

संदर्भ

1. रॉबिन शॉ पुष्प : रॉबिन शॉ पुष्प रचनावली, खण्ड–1 (उपन्यास) : संपादक– डॉ. गीता पुष्प शॉ एवं प्रो. जॉयस शीला शॉ, अमित प्रकाशन, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, 2014, पृ.सं.– 15
2. वही, पृ.सं.– 16
3. वही, पृ.सं.– 18
4. वही, पृ.सं.– 18
5. वही, पृ.सं.– 19
6. वही, पृ.सं.– 19
7. वही, पृ.सं.– 18
8. वही, पृ.सं.– 18